Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

BEHAVIOURISTIC THEORY

व्यवहारवादी तथा गेस्टाल्टवाद दोनों का विकास संरचनावाद के विरोध में हुआ। लेकिन दोनों के विकास दो भिन्न दिशाओं में हुआ। संरचनावाद के आत्मनिष्ठ दृष्टिकोण के विरोध में वाटसन ने 1913 में व्यवहारवाद को स्थापित किया और मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं की व्याख्या में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण पर बल दिया । दूसरी ओर संरचनावाद के विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के विरोध में वरदाइमर ने 1911में गेस्टाल्टवाद को स्थापित किया और समग्र दृष्टिकोण पर बल दिया। अतः प्रत्यक्षीकरण के व्यवहारवादी सिद्धांत तथा गेस्टाल्टवादी सिद्धांत के मौलिक दृष्टिकोण में अन्तर है ।

व्यवहारवादी सिद्धांत की अवधारणाएं :-

1. विश्लेषणात्मक उपागम :- व्यवहारवादी वाटसन ने उद्दीपन तथा प्रतिक्रिया के रूप में प्रत्यक्षीकरण की व्याख्या का प्रयास किया। उनका दृष्टिकोण वस्तुनिष्ठ होते हुए भी विश्लेषणात्मक ही रहा । उन्होंने सीखना की तरह प्रत्यक्षीकरण को भी अर्जित माना। इसदृष्टिकोण से भी यह सिद्धांत गेस्टाल्ट-सिद्धांत से भिन्न है, क्योंकि गेस्टाल्टवादीयों के अनुसार प्रत्यक्षीकरण की विशेषताएँ जन्मजात होती है।
2. आदत-रचना :- प्रत्यक्षीकरण के व्यवहारवादी सिद्धांत को स्पष्ठ करने में वाटसन की अपेक्षा हल ने अधिक योगदान दिया। उन्होंने कहा कि प्रत्यक्षीकरण की उत्पत्ति में आदत रचना, सामान्यीकरण, अवरोध आदि का हाथ होता है ।उन्होंने आदत-रचना तथा सामान्यीकरण के नियमों को प्रत्यक्षीकरण के संगठन का मौलिक आधार माना

। इस दृष्टिकोण से यह सिद्धांत गेस्टाल्ट-सिद्धांत से भिन्न है, क्योंकि गेस्टाल्टवादीयों ने समीपता तथा समानता के नियमों को प्रत्यक्षीकरण के संगठन का मौलिक आधार माना ।

3. क्रिया-प्रतिक्रिया :- हल के अनुसार एक विशेष समय में तंत्रिका- तंत्र में वर्तमान सभी ज्ञानवाही स्नायु प्रवाहों के बीच क्रिया-प्रतिक्रिया होने उनमें कुछ परिवर्तन धटित होता है जिसके कारण वस्तु के प्रत्यक्षीकरण में कुछ नई विशेषताएँ उत्पन्न हो जाती है।

4. पूर्वअनुभूति :- व्यवहारवादी सिद्धांत के समर्थकों ने आदत-निर्माण तथा उद्दीपन-प्रतिरूप के रूप में प्रत्यक्षीकरण में पूर्वअनुभूति के महत्व को माना । वाटसन, हल, उडबरी आदि व्यवहारवादीयों ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि प्रत्यक्षीकरण पूर्णतः सीखा हुआ व्यवहार है । इस आधार पर भी यह सिद्धांत गेस्टाल्ट-सिद्धांत से भिन्न है, क्योंकि गेस्टाल्टवादी

यों ने प्रत्यक्षीकरण में पूर्वअनुभूति के महत्व को सीधे स्वीकार नहीं किया ।